पाठ-15

अंधेर नगरी (नाटक)

लेखक - भारतेन्दु हरिश्चन्द

प्रस्तावना

सुबह सूरज निकलता है, पक्षी चहचहाते हैं, धीरे–धीरे अंधकार दूर होता है और प्रकाश फैलता है। मनुष्य–समाज भी सक्रिय हो उठता है ।

जिस प्रकार प्रकृति की एक व्यवस्था है, वैसे ही मनुष्य ने भी एक व्यवस्था बनाई है, जिससे उसके सारे कार्य सुचार, रूप से हो सकें। कल्पना कीजिए, यदि प्रातःकाल सूरज न निकले, पक्षी न चहचहाएँ, **नदियाँ उल्टी** दिशा में बहने लगें, तो? और यदि मनुष्य समाज में भी कोई व्यवस्था न रहे चारों ओर अराजकता हो, कुछ स्वार्थी लोग ही देश को चलाने लगें, वे जनता को अपना न समझें, उन्हें देश की जनता की दशा का ज्ञान ही न हो, तो, आइए इस पाठ के माध्यम से इन बातों को समझने का प्रयास करें।

सारांश

पहला दृश्य
बाह्य प्रांत

(महंत जी दो चेलों के साथ गाते हुए आते है)

मंहत–बच्चा नारायण दास। यह नगर तो दूर से बड़ा सुन्दर दिखाई पड़ता है। देख, कुछ भिच्छा–उच्छा मिले, तो ठाकुर जी को भोग लगे। और क्या ?

नारायण दास– गुरू जी महाराज। नगर तो नारायण के आसरे से बहुत ही सुन्दर है, जो है सो, पर भिच्छा **सुन्दर मिले,** तो बड़ा आनन्द होय।

मंहत–बच्चा गोबर धनदास। तू पच्छिम की ओर जा और नारायणदास पूरब की ओर जाएगा।

गोबरधनदास– गुरू जी। मैं बहुत सी भिच्छा लाता हूँ।

महंत– बच्चा, बहुत लोभ मत करना।

लोभ पाप का मूल है, लोभ मिटावत मान।

लोभ कभी नहिं कीजिए, या में नरक निदान।

(गाते हुए सब जाते है)

दूसरा दृश्य

स्थान - बाजार

घासीराम– चनाजोर गरम

चना बनावै घासीराम। जिनकी झोली में दूकान।।

चना चुरमुर–चुरमुर बोलै। बाबू खाने को मुँह खोलें

चना खायँ गफूरन, मुन्ना। बोलैं ओर नहीं कुछ सुन्ना।

चना हाकिम सब जो खाते। सब पर दूना टिकस लगाते।

चना जोर गरम–टके सेर।

हलवाई– जलेबियाँ गरमागरम।

घी में गरक, चीनी में तरातर, चासनी में चभाचभ ले भूर का लड्डू। जो खाय सो भी पछताय जो न खाय सो भी पछताय। रेबड़ी कड़ाका। पापड़ पड़ाका। ऐसी जात हलवाई, जिसके छत्तीस **कौम हैं भाई। सब सामान ताजा। खाजा ले खाजा टके सेर खाजा।**

पाचक **वाला** –

मेरा चूरन जो कोई खाय। मुझको छोड़ कहीं नहिंजाय।
चूरन जब से हिन्द में आया। इसका धन बल सभी घटाया।
चुरन अमले सब जो खावैं। दूनी रिश्वत तुंरत पचावैं।
चूरन सभी महाजन खाते। जिससे जमा हज़्म कर जाते।
चूरन खावें लाला लोग। जिनको अकिल अजीरन रोग।
चूरन खावै एडिटर जात। जिनके पेट पचै नहिं बाता
चूरन साहेब लोग जो खाता। सारा हिंद हजम कर जाता
चूरन पुलिस वाले खाते। सब कानून हजम कर जाते।
ले चूरन का ढेर, बेचा टके सेर।

बनियाँ– आटा, दाल, लकड़ी, नमक, घी, चीनी मसाला, चावल ले टके सेर।

(बाबा जी का चेला गोबरधनदास आता है और सब बेचने वालों की आवाज सुन–सुनकर खाने के आनन्द में **बड़ा प्रसन्न होता है।)**

आगे बढ़कर जब वह पूछता है तो सब चीजें टके **सेर** सुनकर वह बड़ा प्रसन्न हो जाता है और अंधेर नगरी का गीत गात हुए जाता है।

तीसरा दृश्य

स्थान-जंगल

महंत जी और नारायण दास एक ओर से 'राम भक्तों' इत्यादि गाते हुए आते हैं और दूसरी ओर से गोबरधनदास अंधेर नगरी गाते हुए आते हैं।

महंत– बच्चा गोबरधनदास। कहो क्या भिक्षा लाये हो गठरी तो भारी मालूम पड़ती है।

गोबरधनदास– बाबा जो बड़ा माल लाया हूँ साढ़े तीन **सेर** मिठाई है।

महत– देखूँ बच्चा! वाह! वाह! बच्चा इतनी मिठाई कहाँ से लाया? किस धर्मात्मा से भेंट हुई?

गोबरधनदास– गुरूजो महाराज! सात पैसे भीख में **मिले** थे, उसी से इतनी मिठाई मोल ली है।

महंत बच्चा– नारायणदास ने मुझसे कहा था कि यहाँ सब चीज टके सेर मिलती है, **मैंने** इसकी बात **पर** विश्वास नहीं किया। बच्चा, यह कौन–सी नगरी है और इसका कौन राजा है, जहाँ टके सेर भाजी और टके सेर खाजा है?

गोबरधनदास– अंधेर नगरी चौपट्ट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा।?

महंत– तो बच्चा! ऐसी नगरी में रहना उचित नहीं है. जहाँ टके सेर भाजी और टके ही सेर खाजा हो। सो बच्चा चलो यहाँ से।

परन्तु गोबरधनदास **वहाँ** से नहीं जाता और गुरूजी से कहता है प्रणाम गुरूजी, मैं आपका नित्य ही स्मरण करूँगा। मैं तो फिर भो कहता हूँ कि आप भी यहीं **रहिए**।

(महंत जी नारायणदास के साथ जाते हैं, गोबरधनदास बैठकर मिठाई खाता है)

चौथा दृश्य

स्थान-राजसभा

(राजा मंत्री आर नौकर लोग यथा स्थान स्थित हैं)

फ़रियादी– महाराज कल्लू बनियाँ की दीवार गिर पड़ी सो मेरी बकरी उसके नीचे दब गई। दोहाई है महाराज, न्याय हो।

राजा– (नौकर से) कल्लू बनिए की दीवार को अभी पकड़ लाओ।

मंत्री– महाराज दीवार नहीं लाई जा सकती।

राजा– अच्छा, उसका भाई, **लड़का**, दोस्त, आशना जो भी हो उसको पकड़ लाओ।

मंत्री– महाराज, दीवार ईट, चूनें की होती है, उसको भाई–बेटा नहीं होता।

राजा– कल्लू बनिए को पकड़ लाओ।

(नौकर लोग दौड़कर बाहर से बनिए को पकड़ लाते **हैं**)

क्यों वे बनिए! इसकी लरकी, नहीं बरकी क्यों दबकर मर गई?

मंत्री– बरकी नहीं महाराज, बकरी।

राजा– हाँ–हाँ, बकरी क्यों मर गई– बोल, नहीं अभी फाँसी देता हू।

कल्लू– महाराज! मेरा कुछ दोष नही। कारीगर **ऐसी** दीवार बनाई **की** गिर पड़ी।

राजाः– अच्छा, इस मल्लू को छोड़ दो, कारीगर को पकड़ लाओ।

कारीगर– महाराज मेरा कुछ कसूर नहीं चूने वाले ने ऐसा बोदा चूना बनाया कि दीवार **गिर** पड़ी।

राजाः– अच्छा इस कारीगर को बुलाओ, नहीं नहीं निकालो, उस चूने वाले को बुलाओ।

(कारीगर निकाला जाता है, चूने वाला पकड़कर लाया जाता है)

क्यों वे ख़ैर–झोपड़ी– चूने वाले! इसकी बकरी कैसे मर गई?

चूने वालाः– महाराज! मेरा कुछ दोष **नहीं**, **भिश्ती** ने चूने में पानी ढेर दे दिया, इसी से चूना कमजोर हो गया होगा।

राजाः– अच्छा, चुन्नीवाला को निकालो, भिश्ती को पकड़ो।

भिश्तीः– महाराज! गुलाम का कोई कसूर नहीं, कसाई ने मशक इतनी बड़ी बनाई कि उसमें पानी जादे आ गया।

राजाः– अच्छा, कसाई **को लाओ** भिश्ती **को** निकालो। क्यों बे कसाई, मशक ऐसी क्यों बनाई कि दीवार लगाई बकरी दबाई?

कसाई– महाराज!

गड़रिया ने टके पर ऐसी बड़ी भेड़ मेरे हाथ बेची कि उसकी मशक बड़ी बन गई।

राजाः– अच्छा कसाई को निकालो, गड़रिए को लाओं सवारी आ गई तो उसको देखने में मैंने छोटी–बड़ी भेड़ का ख़्याल नहीं किया। मेरा कुछ कसूर नहों।

राजाः– इसको निकालो, कोतवाल को लाओ।

क्यों बे कोतवाल! तैंने सवारी ऐसी धूम से **क्यों** निकाली कि गड़रिए ने घबड़ाकर बड़ी भेड़ बेचो, जिससे बकरीं गिरकर कल्लू बनिया दब गया?

कोतवालः– महाराज! महाराज! मैंने तो कोई कसूर नहीं किया, मैं तो शहर के इंतजाम के वास्ते जाता था।

राजाः– कुछ नहीं, महाराज– महाराज, ले जाओ, कोतवाल को अभी फाँसी दो। दरबार बरख़ास्त।

पाँचवा दृश्य

स्थान अरण्य

(गोबरधनदास गाते हुए आते हैं)

अंधेर नगरी अनबूझ राजा।
टका सेर भाजी टका सेर खाजा।।
साँचे मारे–मारे डोलैं।
छली दुष्ट सिर चढ़ि–चढ़ि बोलैं।।
प्रभट सभ्य अंतर छलधारी।
सोई राजसभा बल भारी।।
साँच कहैं ते पनही खावैं।
झूठे बहु विधि पदबी पावैं।।
अंधेर नगरी अनबूझ राजा।
टका सेर भाजी टका सेर खाजा।।
और बैठकर मिठाई खाता रहता है।

गुरू जी ने हमको यहाँ रहने को मना किया था। माना कि **देश** बहुत बुरा है, पर अपना क्या? अपन किसी राजकाज में थोड़े हैं कि कुछ डर है, रोज मिठाई चाभना, मजे में आनंद से रामभजन करना। वहाँ पर चार प्यादे आते हैं और उसे पकड़ लेते हैं।

प्यादा–1 :– चलबे चल, बहुत मिठाई खाकर मुटाया है।

प्यादा–2 :– बाबा जी चलिए **नमो** नारायण कीजिए।

गोबरधनदासः– घबड़ाकर हैं यह आफ़त कहाँ से आई! अरे, भाई मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है, जो मुझको पकड़ते हो?

प्यादा–1 :– **बिगाड़ा** है या बनाया है, इससे क्या मतलब, अब चलिए। फाँसी पर चढ़िए।

गोबरधनदास– फाँसी! अरे बाप रे बाप फाँसी**!** मैंने किसकी जमा लूटी है कि मुझको फाँसी! मैंने किसके प्राण मारे कि मुझकों फाँसी!

प्यादा–2 :– आप बड़े मोटे हैं, इस वास्ते फाँसी होती है।

गोबरधनदास– मोटे होने से फाँसी ? यह कहाँ का न्याय है।

गोबरधनदास चिल्लाता जाता है प्यादे उसे पकड़ ले जाते **हैं** |

छठा दृश्य
स्थान श्मशान

(गोबरधनदास को पकड़े हुए चार सिपाहियों का प्रवेश)

गोबरधनदास – हाय! मैंने गुरू जी का कहना न माना, उसी का फल है। गुरूजी कहाँ हो ? बचाओ– बचाओ!

गुरू जी और नारायणदास आते **हैं** |

गुरू– अरे बच्चा, गोबरधनदास! तेरी यह क्या दशा है ?

गोबरधनदास– गुरूजी दीवार के नीचे बकरी दब गई, सो इसके लिए मुझे फाँसी देते हैं, गुरूजी बचाओ।

गुरू– बच्चा मैंने तो पहले ही कहा था कि ऐसे नगर में रहना ठीक नहीं है, **तुमने** मेरा कहना नहीं सुना कोई चिंता नही, नारायण सब समर्थ हैं।

(भौं चढ़ाकर सिपाहियों से)

सुनो, मुझको अपने शिष्य को अंतिम उपदेश देने दो।

गोबरधनदास– (प्रगट) तब तो गुरूजी हम ही फाँसी पर चढ़ेंगे।

महंत– नहीं बच्चा, हम।

गोबरधनदासः– स्वर्ग जाने में बूढ़ा–जवान क्या? आप तो सिद्ध हैं, आपको गति–अगति से क्या?

सिपाही– यह क्या माजरा है, राजा, मंत्री **और** कोतवाल आते हैं।

राजा– यह क्या गोलमाल है?

सिपाही– महाराज! चेला कहता है मैं फाँसो **चढ़ूँगा** गुरू कहता है मैं फाँसी **चढ़ूँगा** ; कुछ मालूम नहीं पड़ता कि क्या बात है ?

राजा– गुरू से बाबा जी! बोलो! काहे को आप फाँसी चढ़ते **हैं** ?

महंत– राजा! इस समय ऐसी सिद्धता है कि जो मरेगा, सीधा बैकुंठ जायेगा।

मंत्री– तब हम ही फाँसी चढ़ेंगे।

गोबरधनदास– हम–हम, हमको तो हुकुम हैं।

कोतवाल– हम लटकेंगे। हमारे सबब तो दीवार गिरी।

राजा– चुप रहो सब लोग। राजा के रहते और कौन–बैकुंठ जा सकता है। हमको फाँसी चढ़ाओ– जल्दी, जल्दी।

महंत– जहाँ न धर्म न बुद्धि नहिं नीति न सृजन समाज
ते ऐसेहि आपहि नसैं, जैसे चौपटराज

जीवन परिचय

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

जन्मः– भारतेन्दु बाबू का जन्म 1850 में बनारस में हुआ था।

शिक्षाः– उन्होंने बनारस में ही अपनी समस्त शिक्षा प्राप्त की।

रचनाएँः– वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, चंद्रावली, भारत दुर्दशा, नील देवी, प्रेम योगिनी, सती प्रताप।

साहित्य में स्थानः– वे हिन्दी साहित्य में आधुनिक युग के प्रवर्तक **हैं**। ये नई चेतना के प्रतीक साहित्यकार के रूप में जाने जाते **हैं** |

मृत्युः– महज़ 35 वर्ष की आयु में ही भारतेन्दु जी का निधन हो गया था।